Total Pages – 6 **B.A. RNLKWC-/HINDI/CC12T/22**

2022

HINDI (Hons)

B.A. Fifth Semester End Examination - 2022

PAPER - CC12T

Full Marks : 60 *Time : 3 hours*

The figures in the right-hand margin indicate marks.
Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.
Illustrate the answers wherever necessary.

1. **किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर दीजिए :** **10×2=20**

क) 'माखनलाल चतुर्वेदी' ने कौन सी पत्रिका का संपादन किया था? इनकी कविता का मूल स्वर क्या है?

ख) "मजदूरी और प्रेम" निबंध के लेखक हल चलाने वाले और भेड़ चलाने वाले को साधु स्वभाव के क्यों मानते हैं?

(Turn Over)

ग) ''ये है प्रोफेसर शशांक'' रेखाचित्र के आधार पर प्रोफेसर शशांक की कोई दो चारित्रिक विशेषता बताइए।

घ) ''मेरे राम का मुकुट भींग रहा है'' में लेखक ने किस लोक-गीत को आधार बताया है और उसे वे किस अर्थ में व्याख्यायित किया है?

ङ) ''देवदारु'' निबंध में लेखक ने इसे महादेव का प्रिय वृक्ष क्यों कहा है?

च) रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा रचित दो निबंध-संग्रह के नाम बताइए। ''रजिया'' चुड़िहारिन की कोइ एक चारित्रिक विशेषता बताइए।

छ) भारतेन्दु युग के किन्हीं दो निबंधकारों के नाम बताइए।

ज) ''अशोक के फूल' और 'चिन्तामणि' निबंध के लेखक कौन हैं?

झ) ''ठेले पर हिमालय'' और 'शिखरों के सेतु' निबंध के निबंधकारों के नाम लिखिए।

ञ) वियोगी हरि के किन्हीं दो निबंधों के नाम बताइए।

ट) मनोविकार संबंधी दो निबंधों के नाम लिखिए।

ठ) शिवपूजन सहय द्वारा रचित दो निबंधो के नाम बताइए।

ड) 'गेहूँ और गुलाब' एवं 'छितवन की छाँह' के लेखक कौन हैं?

ढ) 'इतिहास और आलोचना' और 'बेहया का जंगल' के रचनाकार कौन है?

ण) 'श्रद्धा-भक्ति' और 'कुटज' के निवंधकार कौन हैं?

B. किन्हीं चार गद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :- 4×5=20

1. आओ, यदि हो सके तो टोकरी उठाकर, कुदाली हाथ में लें, मिट्टी खोदें और अपने हाथ से उसके प्याले बनावें। फिर एक-एक प्याला घर-घर में, कुटिया-कुटिया में रख आवें और सब लोग उसी में मजदुरी का प्रेमामृत पान करें।''

2. ''मनुष्य ज्यों ही समाज में प्रवेश करता है, उसके सुख और दु:ख का बहुत सा अंश दुसरे की क्रिया या अवस्था पर अवलंबित हो जाता है।''

3. ''जमाना बदलता रहा है, अनेक वृक्षों और लताओं ने वातावरण से समझौता किया हैं, कितने ही मैदान मे जा बसे हैं और खासी प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली है, लेकिन देवदारु है कि नीचे नहीं उतरा, समझौते के रास्ते नहीं गया और उसने अपनी खानदानी चाल नहीं छोड़ी।''

4. ''इतनी असंख्य कौसल्याओं के कंठ में बसी हुई जो एक अरूण ध्वनिमयी कौसल्या है, अपनी सृष्टि के संकट में उसके सतत उत्कर्ष के लिए आकुल, उस कौसल्या की ओर, उस भारतीय संवेदना की ओर ही, कहीं राह हैं, घास के नीचे दबी हुई।''

5. मैंने देखा, उसका चेहरा अचानक बिजली के बल्ब की तरह जल उठा और चमक उठीं वे नीली आँखें, जो कोटरों में धँस गई थीं! और अरे चमक उठी हैं आज फिर वे चाँदी की बालियाँ और देखो, अपने को पवित्र कर लो!

6. ''वैदिक ऋचाएं और उपनिषदों के लच्छेदार वाक्य तो उन्हें कण्ठस्थ थे हीं, संस्कृत महाकवियों ने किस शब्द का कहाँ किस अर्थ में कैसा चमत्कारपूर्ण प्रयोग किया हैं, इसको भी वे सोदाहरण उपस्थित करते चलते थें।''

7. ''मनुष्य की प्रकृति में शील और सात्तिवकता का आदि संस्थापक यही मनोविकार है। मनुष्य की सज्जनता या दुर्जनता अन्य प्राणियों के साथ उसके संबंध या संसर्ग द्वारा ही व्यक्त होती है।''

3. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :- **2×10=20**

क) ''मेरे राम का मुकुट भींग रहा है''
निबंध का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

ख) आचार्य शुक्ल की दृष्टि से 'करुणा' निबंध की समीक्षा कीजिए।

ग) निबंध कला की दृष्टि से ''देवदारु'' निबंध की समीक्षा कीजिए।

घ) ''रजिया'' के मूल प्रतिवाद्य पर प्रकाश डालिए।